PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 9 | Issue - 11 | November - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

नई तालीमः नये परिपेक्ष्य की नई सोच

KEY WORDS:

डॉ. कविता

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, फोर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, मेरठ

ABSTRACT

प्रस्तुत लेख गांधी जी के शिक्षा दर्शन आधारित, ''अनुभवजन्य शिक्षा नई तालीम'' का वर्णन करता है। वर्तमान की शिक्षा पद्धति उद्देश्यहीन होने के साथ–साथ सैद्धान्तिक पक्ष पर बल देती है परन्तु गाँधी जी प्रयोजनवादी विचारधारा शिक्षा को व्यवहारिक बनाने पर बल देती है। गाँधी जी का शिक्षा दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है। यह लेख नई तालीम के संदर्भ में वर्तमान शिक्षा में नवीनीकरण उसकी आवश्यकता, उद्देश्य व प्रासंगिकता का वर्णन करता है। नई तालीम के क्रियान्वयन में शिक्षा को उत्पादकता से जोड़कर वर्तमान शिक्षा को प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता का वर्णन करता है।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता से पूर्व गाधी जी ने अक्टूबर 1937 मे नई तालीम के नाम से एक अनुभवजन्य शिक्षा दर्शन पर आधारित शिक्षा पद्धति प्रस्तुत की, जो सर्वोदय सिद्धान्त पर आधारित थी। जिसका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जो एक संतोषजनक जीवन यापन कर सके।

आज देश मैं यदि एक बड़ी समस्या है तो वह है वर्तमान शिक्षा पद्धति। यही कारण है कि आज शिक्षा में बदलाव को लेकर कई नये कदम उठाए जा रहे हैं समाज को एक नई दिशा और दशा देने के लिए शिक्षा मे बदलाव की माँग लगातार उठ रही है।

इतिहास की बात करें तो स्वतंत्रता भारत के लिए गांधी जी का मुख्य सपना था 'ग्राम स्वराज' उन्होने कहा– ''मैंने ऐसे दरिद्र भारत की कल्पना नहीं की जिसमें करोड़ो अनपढ़ और बेसमझ लोग बसते हों। मैंने तो उस भारत की कल्पना की है कि जो अपनी संस्कृति के अनुकूल पथ पर हमेशा आगे ही बढ़ता हेगा। मैंने ऐसे भारत की भी कल्पना नहीं की जिसकी प्रगति मरती हुई पश्चिमी सभ्यता की एक घटिया या बहुत बढ़िया नकल हो। जो स्वप्न मैं देख रहा हूँ वह अगर कभी सच्चा निकल आया। अगर देश के सात लाख ग्रामों का हर एक ग्राम अपने आप में एक जीता जागता राष्ट्र बन गया जिसमैं कोई आलसी नहीं, कोई बेकार नहीं, जिसमें सब कोई उपयोगी कार्यों में लगे है हर एक को पौष्टिक भोजन मिलता है सब हवादार घरो में रहते हैं और उन्हें बदन ढकने के लिये पर्याप्त खादी प्राप्त है, और जिसमें सभी ग्रामवासी अपने चारों ओर की सफाई के साधनों व सिद्धान्तों का पूरा ज्ञान रखते हैं, तब हमारे राष्ट्र की जरूरतें उत्तरोत्तर बढ़ेंगी उन्हें हमें पूरा करना होगा।''

आवश्यकता

तीव्र परिवर्तन के इस दौर में ग्रामीण क्षेत्र भी नवीन चुनौतियों के साथ तीव्र पविर्तन का सामना कर रहा हैं। यदि वर्तमान की ग्रामीण आवश्यकताओं पर ध्यान दें तो आज शहरी क्षेत्र के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्र में भी सामाजिक सक्रियता कार्यक्रमों तथा सामाजिक नेतृत्व व संस्थागत क्षमता को मजबूत करने की तीव्र आवश्यकता है परन्तु पविर्तन की वर्तमान प्रक्रिया अत्यंत जटिल है ग्रामीण विकास की सबसे बड़ी चुनौती समुचित एवं उपयोगी शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षा को अनुभवजजन्य बनाकर रोजगार से जोड़ने की आवश्यकता है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रो ने प्रारम्भिक शिक्षा के साथ–साथ उच्च शिक्षा के मौकों को ढूंढने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण युवकों को वर्तमान बहुस्तरीय परिवर्तनों के अनुकूल अपनी क्षमता, विशेष कार्य सम्बन्धी कौशल एवं विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों मे भागीदारी करने की आवश्यकता है।

गांधी जी का शिक्षा दर्शन समग्र शिक्षा पर आधारित है। गाधी जी केवल साक्षरता को ही शिक्षा नहीं मानते थे उन्होंने कहा– ''साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ, यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरूष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है।'' उनके अनुसार शिक्षा का कार्य मनुष्य को केवल पढ़ना, लिखना और गणित सिखाना ही नहीं है अपितु उसके हाथ, मस्तिष्क और हृदय का विकास करना भी है। गांधी जी देश की आधारभूत आवश्यकताओं के प्रति सजग थे। उन्होंने इन आवश्यकताओं की पूर्ति व वर्गविहीन समाज के निर्माण के लिये क्रिया प्रधान पाठ्चर्या के निर्माण पर बल दिया। जिसका उद्देश्य सभी शैक्षणिक, आर्थिक और सामाजिक विकास वशेषतः समाज के पिछले वर्गों का शोषणमुक्त, समान अधिकार रखने वाले नव समाज की रचना करना रहा है और यही 'नयी तालीम' का प्रमुख उद्देश्य है। नयी तालीम को सामाजिक विकास के प्रमुख साधन के रूप में उपयोग करने से ही ग्रामीण क्षेत्र का उसकी पूरी क्षमता के साथ विकास संभव हो सकेगा। 'नई तालीमः नये परिप्रेक्ष्य की नई सोच' के माध्यम से इस उद्देश्य की प्राप्ति प्रयासरत है।

गांधी जी ने कहा था, 'नई तालीम भारत के लिये उनका अन्तिम और सर्वश्रेष्ठ योगदान है।'' गाधी जी चाहते थे कि भारत के लोग स्वावलंबी बने और यह काम नयी तालीम के द्वारा ही सम्भव है वर्तमान में देखे तो आज भी हर भारतीय मैकाले की शिक्षा का बोझ ढो रहा है। यह शिक्षा मानव समाज को हृदय विहीन भोगवाद के अंधेरे गर्त में ढकेले जा रही है। जिसका उद्देश्य मनुष्य को संवेदनहीन एवं विवेकशून्य मशीन के रूप में परिवर्तन करना है। आज देश की अधिकांश शिक्षा व्यवस्था राज्याश्रित अथवा पूंजीपतियों पर आश्रित है। अधिकांश शिक्षा संस्थाएं संसाधन एवं अनुशासन के अभाव में निष्क्रिय हैं। इसलिये गुणवत्ता से युक्त शिक्षा देने में असमर्थ है। तथा पूंजीपतियों पर आश्रित सभी शिक्षण संस्थाएं व्यवसायिक रूप से सक्रिय है, जो गरीब बच्चों की पहुंच से बाहर है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गांधी जी की कल्पना के अनुसार बुनियादी विद्यालय में उत्पादन व्यवसायों को आरम्भ कर देने से नयी तालीम को देशभर मे प्रारम्भिक शिक्षा की सार्वभौम पद्धति बनाया जा सकता है।

नई तालीम– शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ना

गांधी जी द्वारा प्रस्तावित नई तालीम को आमतौर पर एक ऐसी शिक्षा पद्धति के रूप में जाना जाता है जो उत्पादक कार्य पर आधारित है। अतः उत्पादक कार्य जहाँ इसका आधार है। वही काम के द्वारा सीखना इसकी एक मुख्य केन्द्र है। नयी तालीम को वर्तमान संदर्भ में समझने के लिए गांधी जी की कुछ पंक्तियाँ समझने की आवश्यकता है, ''लेकिन हर हस्तकला को सिर्फ यांत्रिक रूप से नहीं सिखाया जाना है जैसा कि आज किया जाता है। बल्कि उसे वैज्ञानिक तरीके से सिखाना होगा अर्थात हर बच्चे को हर प्रक्रिया के बारे में क्यों और किसलिए भी जानना चाहिए।'' (हरिजन)

नई तालीम के क्रियावन वाले भाग में उत्पादक कार्य द्वारा शिक्षा को सीखने की बाकी प्रक्रिया में इस तरह समेकित किया गया था कि सीखने की अन्य शिक्षण पद्धतियों में उसका अन्तर समझ पाना कठिन है। इसलिए इसके क्रियान्वयन करने वाली शैक्षिक संस्थाओं को इसकी जानकारी हो। उत्पादक कार्यो में ये सभी काम शामिल थे, कपड़ा उत्पादन चरण अर्थात कपास की खेती, फसल काटना, रूई से बिनौला अलग करना, प्रसंस्करण, टंपिंग, धुनकना, धनी पुनियाँ बनाना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, बढ़ई का काम, सब्जियाँ उगाना, कागज बनाना आदि–आदि। कलात्मक गतिविधियाँ जैसे चित्रकारी, संगीत, नृत्य नाट्यकला आदि। ये केवल कलात्मक गतिविधियाँ नहीं है। बल्कि इन सब कलाओं से बच्चे का सामाजिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक विकास सम्भव है। आम तौर पर माना जाता है कि नई तालीम व्यवस्था केवल निम्न स्तर के हाथ से किए जाने वाले कामों के लिए ही उपयुक्त है, बौद्धिक कार्यों के लिए नहीं। और नई तालीम से निकले विद्यार्थी आधुनिक उच्च शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ नहीं होते।

प्रासंगिकता

कई आधुनिक शिक्षाविदों ने गांधी जी की प्रस्तावित बुनियादी शिक्षा को योजना का आप्रासंगिक शिक्षा योजना घोषित कर दिया। बावजूद इसके आज भी गाँधी जी के शैक्षणिक विचारों का आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में महत्व है। गांधी जी ने शिक्षा के व्यवसायिक पक्ष पर काफी जोर दिया जिसे आज हम शिक्षा के व्यवसायीकरण की संज्ञा देते हैं और पाठ्यक्रम में लागू कर चुके हैं। सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में आज भी शिल्प का उतना ही महत्व है तथा सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य आज भी स्कूल में पाठ्यक्रम का हिस्सा है। गांधी जी की नई तालीम आज एक नया रूप लेकर उनके आदर्श समाज की छवि साकार करती है जो छोटे–छोटे आत्मनिर्भर समुदायों से बना है और जिसके आदर्श नागरिक उद्गम आत्मसम्मान और उदारता के गुणों से परिपूर्ण है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि गांधी जी की नई तालीम बच्चों को एक पूर्ण कुशल नागरिक बनाने पर बल देती है। साथ ही देश की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा की योजना प्रस्तुत करती है। जो भारत को ना केवल आत्मनिर्भर बनाने के लिये बल्कि सम्पूर्ण, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन को पुनर्जीवित करने वाली है। अनुभवजन्य शिक्षा पर ध्यन केन्द्रित कर शिक्षा को व्यवहारिक बनाने का प्रयास है। अर्थात आज की शिक्षा को विद्यार्थी के अनुकूल बनाना होगा। जिससे विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार योग्य हो जाए।

संदर्भ सूची

1 एन0यू0ई0पी0ए0 (2016)
2 बिहारी, रमनलाल, 'शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त', रस्तौगी पब्लिकेशन
3 सद्गोपाल, अनिल (2009) 'शिक्षा में बदलाव का सवाल', ग्रन्थ शिल्पी प्रा0लि0 दिल्ली।
4 गांधी मोहनदास करमचन्द (1927) 'यंग इण्डिया', मद्रास
5 गांधी मोहनदास करमचन्द (2000) 'मेरे सपनों का भारत;, अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन।
6 गांधी कनक मल (2004) 'नई तालीम के शिल्पकार', आशा देवी–आर्यनायक् नयी तालीम समिति, वर्धा।
7 प्रभात, एस0व्ही0 (2010) 'नयी तालीम नया परिप्रेक्ष्य', सीरियल्स पब्लिकेशन, दिल्ली।
8 कुमार, कृष्ण (2010) 'गाँधी जी नई तालीम'
9 गाँधी, 'हरिजन', 1939
10 नैयर, सौम्य, 'गांधी जी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में।
11 http//www.biharscert.in/e-Samvad/Gandhiji aur Buniyadi Shiksha